मैसूर का चीफ मिनिस्टर आया। कुछ भी नहीं जानता कि भगवान क्या है और देवताएं क्या हैं। एकदम ही तो नहीं जानते हैं। बहुत मुश्किल है बुद्धि में कोई चीज को बैठाना। नई बातें हैं ना। बहुत ही मुश्किल से समझते हैं। आश्चर्य होकर सुनते हैं। नई चीज को समझने की कोशिश की जाती है। ज्ञान तो एक सेकेंड में मिलता है जीवनमुक्ति का। तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम तो बाप के बच्चे हैं। विश्व के मालिक थे। हम शिवबाबा के बच्चे हैं तो जरूर ही विश्व का मालिक होना चाहिए ना। बुद्धि कहती है आत्मा को वर्सा मिलना है। ब्रह्माण्ड का मालिकपणा। फिर हम कहते हैं कि स्वर्ग का रचयिता भी बाप है तो इनके भी तो मालिक होना चाहिए ना। आत्मा के रूप में तो अपने घर के मालिक हैं जिसके मुक्ति भी कहते हैं। वो भी हमारा हक है। फिर स्वर्ग का भी हमारा हक है ना। क्यों नहीं बाप का वर्सा होना चाहिए। बाप है ना हेवन स्वर्ग की स्थापना करते हैं। बाप परमधाम में रहते हैं तो हम भी तो अधिकारी है ना। अब बाप फिर से आया हुआ है जन्मसिद्ध अधिकार देने के लिए। तो बच्चों को कितना ही खुशी होनी चाहिए ना ; परंतु माया भुला देती है ;क्योंकि घर की क्या2 छी2 बातों की आदत पड़ी हुई है। तो फिर विकर्म हो जाता है। आदमी अच्छा उनको बैठ तमली में समझावे और मेहनत करे। पत्थर को पारस बनाना है ना। तुम बच्चे भी पत्थर से पारस बन जाते हो। भक्तिमार्ग में कोई भी बात पर ठहरते नहीं तुम समझते हो कि आत्मा भी बिंदी है और बाप भी बिंदी है। बाप बच्चों को समझाते हैं कि मैं भी बिंदी हूं। आत्मा में 84जन्मों का पार्ट भरा हुआ है, जो रिपीट होता है। यह बहुत विचित्र ज्ञान है। चित्र रहित ज्ञान आत्मा ही उठाय सकती है। किसको कहो कि यह बिंदी है तो समझेंगे नहीं। यहां भी बहुत हैं जो समझ नहीं सकते हैं। .....कहते हैं कि हे प्रभु तेरी लीला। यानी कि तुमने रची है समझत हैं कि बाप ने ही सृष्टि को रचा है। तुम बच्चे कहेंगे कि यह अनादि है। लीला कहने से किसको समझ में नहीं आता। .....फिर कब बनाया यह सवाल उठ नहीं सकता। ज्ञान बड़ा ही गुह्य है। किसकी बुद्धि (में) बैठ ना सके। ईश्वरीय पाठशाला में जाने बिगर तो पढ़ ना सके। कहते हैं कि हम तो कहीं भी जाते नहीं.....यूनिवर्सिटी भी है, पढ़ कैसे सकेंगे? बहुत है जिनकी बुद्धि में धारण (धारणा) नहीं होती है। ना ज्ञानी ,ना योगी। .....बाबा कहते रहते हैं आंतरिक खुशी का पारा उनको रहेगा जो सर्विस पर रहेंगे। विराट का चित्र बाबा ने मांगा है। भक्तिमार्ग में विराट रूप बनाते हैं। खुशी नहीं है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा है। हमारा विराट स्वरूप है यानी कि हम विराट रूप धारण करते हैं पार्ट बजाने। तुम .....पहले आते हो बहुत पार्ट बजाते हो। शुरू से लेकर तुम 84जन्म लेते हो। शरीरों की कितनी ही वैरायटी होती है। वैरायटी ..... लेते हैं। विराट तंगर भी नाम है। एक गांव है। इस बेहद की दुनियां को भी विराट तंगर कहेंगे। यह (झाड़) विरायटी (वैराइटी) फीचर्स का है। कितने ढेर मनुष्य हैं। पार्ट भी बजाते रहते हैं। सबके फीचर्स अलग2 हैं। मनुष्य वैरायटी है। मनुष्य तो मनुष्य ही होंगे ;किंतु कोई काले और कोई कैसे। वह है फूलों का झाड़। यह है वैरायटी फीचर्स का झाड़। जापान और चीन में भी कुछ फर्क है। वह सब क्रिश्चियन्स भाषा में थोड़ा2 फर्क है। (इसको) कहा जाता है वैरायटी भाषायें, वैरायटी फीचर्स। तुम्हारा स्कूल कैसा ही वण्डरफुल है। पढ़ाने वाला एक है। तुम भी नम्बरवार पुरुषार्थ के अनुसार चलते हो। इनको कहा जाता है रुहानी चर्चा। अब समय पूरा हुआ है। बच्चे लिखते हैं कि घड़ी2 भूल जाते हैं। आगे चलकर तुम नम्बरवार अभूल बनते जावेंगे। पुरुषार्थ फिर ड्रामा के (प्लेन) अनुसार होता जाता है। ड्रामा पर एकरस ही रहना चाहिए। .....कर्मातीत अवस्था होगी फिर अभूल.....। भूल होती है जो पढ़ते हैं उन्हों की बाप कहते....कि बीती का चिंतन क्यों करते हो? वो भी बंद होता जावेगा। अच्छा, मीठे2 रुहानी सिकीलधे बच्चों को रुहानी बाप वा दादा का दिल जान ,सिक वा प्रेम से याद प्यार और गुडनाइट।